

॥ श्रीगुरुः ॥

शिव चालीसा

228



गीताप्रेस गोरखपुर

ॐ नमः शिवाय

१

श्रीशिवचालीसा

—०—

श्रीशिवप्रातःस्मरणस्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं
गङ्गाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम् ।
खट्वाङ्गशूलवरदाभयहस्तमीशं

संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥
प्रातर्नमामि गिरिशं गिरिजार्धदेहं
सर्गस्थितिप्रलयकारणमादिदेवम् ।
विश्वेश्वरं विजितविश्वमनोऽभिरामं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥
प्रातर्भजामि शिवमेकमनन्तमाद्यं
वेदान्तवेद्यमनघं पुरुषं महान्तम् ।

नामादिभेदरहितं षड्भावशून्यं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥

प्रातः समुत्थाय शिवं विचिन्त्य श्लोकत्रयं येऽनुदिनं पठन्ति ।
ते दुःखजातं बहुजन्मसंचितं हित्वा पदं यान्ति तदेव शम्भोः ॥

दोहा

अज अनादि अविगत अलख, अकल अतुल अविकार ।
 बंदौं शिव-पद-युग-कमल अमल अतीव उदार ॥ १ ॥
 आर्तिहरण सुखकरण शुभ भक्ति-मुक्ति-दातार ।
 करौ अनुग्रह दीन लखि अपनो विरद विचार ॥ २ ॥
 ग्रयो पतित भवकूप महँ सहज नरक आगार ।
 सहज सुहृद पावन-पतित, सहजहि लेहु उबार ॥ ३ ॥
 पलक-पलक आशा भर्यो, रह्यो सुबाट निहार ।
 ढरौ तुरंत स्वभाववश, नेक न करौ अबार ॥ ४ ॥

जय शिव शंकर औढरदानी ।

जय गिरितनया मातु भवानी ॥ १ ॥

सर्वोत्तम योगी योगेश्वर ।

सर्वलोक-ईश्वर-परमेश्वर ॥ २ ॥

सब उर प्रेरक सर्वनियन्ता ।

उपद्रष्टा भर्ता अनुमन्ता ॥ ३ ॥

पराशक्ति-पति अखिल विश्वपति ।

परब्रह्म परधाम परमगति ॥ ४ ॥

सर्वातीत अनन्य सर्वगत ।

निजस्वरूप महिमामें स्थितरत ॥ ५ ॥

अंगभूति-भूषित श्मशानचर ।

भुजंगभूषण चन्द्रमुकुटधर ॥ ६ ॥

वृषवाहन नंदीगणनायक ।
अखिल विश्वकेभाग्य-विधायक ॥ ७ ॥
व्याघ्रचर्म परिधान मनोहर ।
रीछचर्म ओढे गिरिजावर ॥ ८ ॥
कर त्रिशूल डमरूवर राजत ।
अभय वरद मुद्रा शुभ साजत ॥ ९ ॥

तनु कर्पूर-गौर उज्ज्वलतम ।

पिंगल जटाजूट सिर उत्तम ॥ १० ॥

भाल त्रिपुण्ड्र मुण्डमालाधर ।

गल रुद्राक्ष-माल शोभाकर ॥ ११ ॥

विधि-हरि-रुद्र त्रिविध वपुधारी ।

बने सृजन-पालन-लयकारी ॥ १२ ॥

तुम हो नित्य दयाके सागर ।

आशुतोष आनन्द-उजागर ॥ १३ ॥

अति दयालु भोले भण्डारी ।

अग-जग सबके मंगलकारी ॥ १४ ॥

सती-पार्वतीके प्राणेश्वर ।

स्कन्द-गणेश-जनक शिव सुखकर ॥ १५ ॥

हरि-हर एक रूप गुणशीला ।

करत स्वामि-सेवककी लीला ॥ १६ ॥

रहते दोउ पूजत पुजवावत ।

पूजा-पद्धति सबन्हि सिखावत ॥ १७ ॥

मारुति बन हरि-सेवा कीन्ही ।

रामेश्वर बन सेवा लीन्ही ॥ १८ ॥

जग-हित घोर हलाहल पीकर ।

बने सदाशिव नीलकंठ वर ॥ १९ ॥

असुरासुर शुचि वरद शुभंकर ।

असुरनिहन्ता प्रभु प्रलयंकर ॥ २० ॥

‘नमः शिवाय’ मन्त्र पञ्चाक्षर ।

जपत मिटत सब क्लेश भयंकर ॥ २१ ॥

जो नर-नारि रटत शिव-शिव नित ।

तिनको शिव अति करत परमहित ॥ २२ ॥

श्रीकृष्ण तप कीन्हों भारी ।

ह्वै प्रसन्न वर दियो पुरारी ॥ २३ ॥

अर्जुन संग लड़े किरात बन ।

दियो पाशुपत-अस्त्र मुदित मन ॥ २४ ॥

भक्तनके सब कष्ट निवारे ।

दे निज भक्ति सबन्हि उद्धारै ॥ २५ ॥

शङ्खचूड़ जालन्धर मारे ।

दैत्य असंख्य प्राण हर तारे ॥ २६ ॥

अन्धकको गणपति पद दीन्हों ।

शुक्र शुक्रपथ बाहर कीन्हों ॥ २७ ॥

तेहि सजीवनि विद्या दीन्हों ।

बाणासुर गणपति-गति कीन्हों ॥ २८ ॥

अष्टमूर्ति पंचानन चिन्मय ।

द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग ज्योतिर्मय ॥ २९ ॥

भुवन चतुर्दश व्यापक रूपा ।

अकथ अचिन्त्य असीम अनूपा ॥ ३० ॥

काशी मरत जंतु अवलोकी ।

देत मुक्ति-पद करत अशोकी ॥ ३१ ॥

भक्त भगीरथकी रुचि राखी ।

जटा बसी गंगा सुर साखी ॥ ३२ ॥

रुरु अगस्त्य उपमन्यू ज्ञानी ।

ऋषि दधीचि आदिक विज्ञानी ॥ ३३ ॥

शिवरहस्य शिवज्ञान प्रचारक ।

शिवहिं परम प्रिय लोकोद्धारक ॥ ३४ ॥

इनके शुभ सुमिरनते शंकर ।

देत मुदित है अति दुर्लभ वर ॥ ३५ ॥

अति उदार करुणावरुणालय ।

हरण दैन्य-दारिद्र्य-दुःख-भय ॥ ३६ ॥

तुम्हरो भजन परम हितकारी ।

विप्र शूद्र सब ही अधिकारी ॥ ३७ ॥

बालक वृद्ध नारि-नर ध्यावहिं ।

ते अलभ्य शिवपदको पावहिं ॥ ३८ ॥

भेदशून्य तुम सबके स्वामी ।

सहज सुहृद सेवक अनुगामी ॥ ३९ ॥

जो जन शरण तुम्हारी आवत ।
सकल दुरित तत्काल नशावत ॥ ४० ॥



दोहा

बहन करौ तुम शीलवश, निज जनकौ सब भार ।
 गनौ न अघ, अघ-जाति कछु, सब विधि करौ सँभार ॥ १ ॥
 तुम्हरो शील स्वभाव लखि, जो न शरण तव होय ।
 तेहि सम कुटिल कुबुद्धि जन, नहिं कुभाग्य जन कोय ॥ २ ॥
 दीन-हीन अति मलिन मति, मैं अघ-ओघ अपार ।
 कृपा-अनल प्रगटौ तुरत, करौ पाप सब छार ॥ ३ ॥
 कृपा-सुधा बरसाय पुनि, शीतल करो पवित्र ।
 राखौ पदकमलनि सदा, हे कुपात्रके मित्र ! ॥ ४ ॥

श्रीशिवाष्टक

आदि अनादि अनंत अखंड अभेद अखेद सुबेद बतावैं ।
अलख अगोचर रूप महेस कौ जोगि-जती-मुनि ध्यान न पावैं ॥
आगम-निगम-पुरान सबै इतिहास सदा जिनके गुन गावैं ।
बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदासिव कौं नित ध्यावैं ॥ १ ॥
सृजन सुपालन-लय-लीला हित जो बिधि-हरि-हर रूप बनावैं ।
एकहि आप बिचित्र अनेक सुबेष बनाइ कैं लीला रचावैं ॥

सुंदर सृष्टि सुपालन करि जग पुनि बन काल जु खाय पचावैं ।
 बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदासिव कौं नित ध्यावैं ॥ २ ॥
 अगुन अनीह अनामय अज अविकार सहज निज रूप धरावैं ।
 परम सुरम्य बसन-आभूषन सजि मुनि-मोहन रूप करावैं ॥
 ललित ललाट बाल बिधु बिलसै रतन-हार उर पै लहरावैं ।
 बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदासिव कौं नित ध्यावैं ॥ ३ ॥
 अंग बिभूति रमाय मसानकी बिषमय भुजगनि कौं लपटावैं ।

नर-कपाल कर मुंडमाल गल, भालु-चरम सब अंग उढ़ावैं ॥
 घोर दिगंबर, लोचन तीन भयानक देखि कै सब थरवैं ।
 बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदासिव कौं नित ध्यावैं ॥ ४ ॥
 सुनतहि दीनकी दीन पुकार दयानिधि आप उबारन धावैं ।
 पहुँच तहाँ अविलंब सुदारुन मृत्युको मर्म बिदारि भगावैं ॥
 मुनि मृकंडु-सुतकी गाथा सुचि अजहुँ बिग्यजन गाई सुनावैं ।
 बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदासिव कौं नित ध्यावैं ॥ ५ ॥

चाउर चारि जो फूल धतूरके, बेलके पात औ पानि चढ़ावैं ।
 गाल बजाय कै बोला जो 'हरहर महादेव' धुनि जोर लगावैं ॥
 तिनहिं महाफल देय सदासिव सहजहि भुक्ति-मुक्ति सो पावैं ।
 बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदासिव कौं नित ध्यावैं ॥ ६ ॥
 बिनसि दोष दुख दुरित दैन्य दारिद्र्य नित्य सुख-सांति मिलावैं ।
 आसुतोष हर पाप-ताप सब निरमल बुद्धि-चित्त बकसावैं ॥
 असरन-सरन काटि भवबंधन भव निज भवन भव्य बुलवावैं ।

बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं ॥ ७ ॥
 औढरदानि, उदार अपार जु नैकु-सी सेवा तें दुरि जावैं ।
 दमन असांति, समन सब संकट, बिरद बिचार जनहि अपनावैं ॥
 ऐसे कृपालु कृपामय देव के क्यों न सरन अबहीं चलि जावैं ।
 बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदासिव कौं नित ध्यावैं ॥ ८ ॥

आरती

आरति परम साम्ब-शंकरकी ।

सत्य सनातन शिव शुभकरकी ॥

आदि, अनादि, अनन्त, अनामय ।

अज, अविनाशी, अकल, कलामय ।

सर्वरहित नित सर्व-उरालय ।

मस्तक सुरसरिधर शशिधरकी ।
आरति परम साम्ब-शंकरकी ॥

कर्ता, भर्ता, जगसंहारी ।
ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र तनुधारी ।
सर्वविकाररूप अविकारी ।

अग-जग-पालक प्रलयंकरकी ।
आरति परम सांब-शंकरकी ॥

विश्वातीत विश्वगत स्वामी ।

द्रष्टा साक्षी अन्तर्यामी ।

काम-काल सब-जग-हित कामी ।

अनघ-स्वरूप सकल अघहरकी ।

आरति परम सांब-शंकरकी ॥

मुनि-मन-हरण मधुर शुचि सुंदर ।

अति कमनीय रूप सुषमावर ।

दिव्याम्बर

रत्नाभूषणधर ।

सर्व-नयन-मन-हर

सुखकरकी ।

आरति

परम

सांब-शंकरकी ॥

विकट

कराल

पंचमुखधारी ।

मुण्डमाल

विषधर

भयकारी ।

हाथ

कपाल

श्मशान-बिहारी ।

वेष अमंगल मंगलकरकी ।
 आरति परम सांब-शंकरकी ॥
 भोगी, योगी, ध्यानी, ज्ञानी ।
 जग-अभिमानाधार अमानी ।
 आशुतोष अति औढरदानी ।
 दैन्य-दुरित-दुर्गतिहर हरकी ।
 आरति परम सांब-शंकरकी ॥

श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय

त्रिलोचनाय

भस्माङ्गरागाय

महेश्वराय ।

नित्याय

शुद्धाय

दिगम्बराय

तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ॥ १ ॥

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय

नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।

मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय

तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ॥ २ ॥

शिवाय

गौरीवदनाब्जवृन्द-

सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।

श्रीनीलकण्ठाय

वृषध्वजाय

तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ॥ ३ ॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य-

मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।

चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय

तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ॥ ४ ॥

यक्षस्वरूपाय

जटाधराय

पिनाकहस्ताय

सनातनाय ।

दिव्याय

देवाय

दिगम्बराय

तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ॥ ५ ॥

पञ्चाक्षरमिदं

पुण्यं

यः

पठेच्छिवसन्निधौ ।

शिवलोकमवाप्नोति

शिवेन

सह

मोदते ॥ ६ ॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।